शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

झारखण्ड की असुर जनजाति

श्रद्धारानी कश्यप
सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र विभाग)
राँची महिला महाविद्यालय
राँची, झारखण्ड, भारत

शोध संक्षेप

झारखण्ड सदियों से आदिमजनों की स्थली रहा है। यहाँ के जंगलों ने कई आदिम जनसमूहों को सदियों पूर्व अपनी ओर आकर्षित किया, किंतु मध्यकाल में अनेक गैर आदिवासियों के आ जाने के कारण ये आदिवासी समूह और भी अधिक दुर्गम स्थलों की ओर जाकर बस गया। इन घटनाओं से प्रभावित होने वाली अनेक आदिम जनजातियों में से एक असुर जनजाति भी थी जो अत्यंत ही जंगल पहाड़ी इलाकों में चली गई। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी असुर जनजाति पर विचार किया गया है। प्रस्तुत शोधपत्र विभिन्न द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त तथ्यों के समाजशास्त्रीय विश्लेषण पर आधारित है।

मुख्य बिंदु - *वास्तुकार, अल्पसंख्यक, गैरआदिवासी*

प्रस्तावना

झारखण्ड की भूमि में कुल 32 जनजातियाँ हैं। उनमें से असुर जनजाति को आदिम जनजाति की श्रेणी में रखा गया है। असुर वह आदिम समुदाय है, जिनका इतिहास बहुत प्राचीन और गौरवशाली रहा है। ये उच्च कोटि के वैज्ञानिक और वास्तुकार थे। इन्हें लोहे का प्रयोग करना ईसा के 2500 वर्ष पूर्व में भी ज्ञात था। डाल्टन, रिजले आदि का मत है कि असुर यहाँ के पूर्व निवासी थे, किंतु कलांतर में असुरों को अपने जीवन, अस्तित्व के लिए हमेश संघर्ष करना पड़ा, जिससे उसकी जनसंख्या घटती चली गई। आज झारखण्ड में ये अल्पसंख्यक होकर रह गए हैं। असुर जनजाति के जीवन के अनेक ऐसे अंग हैं जैसे - उनकी भाषा, धर्म, संस्कृति, जीविकोपार्जन के तरीके, उनकी विभिन्न आस्थाएं, जिन्हें वर्तमान समय में समझना अत्यंत आवश्यक हो गया है, क्योंकि जिस जनजाति का एक गौरवमयी इतिहास रहा था वह आज अपने जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के लिए संघर्षरत है।

झारखण्ड की 8 आदिम जनजातियों में से एक असुर जनजाति झारखण्ड की एक अल्पसंख्यक जनजाति है। यह जनजाति झारखण्ड के पठारी इलाके सिंहभूम की प्रमुख जनजाति है। वे प्रोटो आस्ट्रेलायड प्रजाति के हैं और मुण्डा वर्ग की मालेय या असुरी भाषा बोलते हैं। वर्तमान में कुछ लोग सादरी या नागपुरी भाषा का प्रयोग भी करते हैं। असुर समाज आज भी अपनी पुरातन परंपरा में जी रहा है। वर्तमान में असुर जनजाति की स्थिति को देखकर शायद ही किसी को यकीन हो कि ये वही वीर असुर के वंशज हैं, जिनकी दंतकथा देवासुर संग्राम में सुनने को मिलती है। आज इस जनजाति की आर्थिक, शैक्षणिक, राजनीतिक स्थिति अत्यंत चिंतणीय है। झारखण्ड के कुल आदिवासी समाज में इनकी

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उपस्थिति नगण्य मालूम होती है। इनका परंपरागत पेशा समय के साथ लुप्त होता जा रहा है। आज वे परंपरागत पेशों को छोड़कर कृषि कार्य में लग गए हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

अत्यंत प्राचीन काल में झारखण्ड की आबादी नगण्य थी। जीवन आदिम था। आर्यों के आगमन से पूर्व झारखण्ड की सभ्यता और संस्कृति में द्रविड़ तत्वों की प्रधानता थी। असुरों का पहाड़ियों पर आधिपत्य होते ही इन क्षेत्रों में घरों तथा छोटे गढ़ों का निर्माण होने लगा। मिट्टी के बर्तन, तीर धनुष एवं अन्य आयुध परिष्कृत होते गए। संभवतः जब सिन्धु घाटी में कांस्यकालीन संस्कृति का विकास हो रहा था, उसी समय झारखण्ड में नवपाषाण संस्कृति विकसित हुई। नवपाषाणयुग में मनुष्यों द्वारा चिकने, चमकदार तथा नुकीली कुल्हाड़ियाँ, तीर तथा पीसने के औजार के उपयोग के प्रमाण झारखण्ड में मिले हैं। असुरों को लोहे का प्रयोग करना ईसा के 2500 वर्ष पूर्व में भी ज्ञात था। (वीरोत्तम, 2006: 446 - 447)

रिजले ने माना है कि असुर प्राचीन निवासियों के अवशेष हैं, जो मुण्डाओं द्वारा भगाए गए थे। हरजलिंग हाउस कहते हैं कि वे एक सभ्य जाति के थे जो घर बनाते थे, खदानों में काम करते थे और उन्होंने छोटानागपूर में अपने प्राचीन भवनों के अवशेष छोड़े हैं, जिन्हें सामान्यतः असुर गढ़ कहा जाता है। (बनर्जी 2007: 38) 'ऐसा कहा जाता है कि वे लोग प्राथमिक पद्धति से लोहा गलाने का काम करते थे और गले लोहे से विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के निर्माण में उनका एकाधिकार था।' (सिंह सुनील कुमार 2009: 151)

असुरों की सभ्यता संस्कृति

असुर समाज एक परंपरागत समाज है। इनके यहाँ आज भी वर्षों से चली आ रही मान्यताएं, परंपराएं, रूढ़ियाँ, रहन-सहन के तरीके, पारंपरिक खान-पान तथा जीविकोपार्जन के परंपरागत साधन को देखा जा सकता है। चूंकि इनका निवास झारखण्ड के दुर्गम जंगली एवं पहाड़ी इलाकों में है। अतः इनकी धार्मिक मान्यताएं जंगल से प्रभावित हैं। असुरों के सर्वश्रेष्ठ देवता सिंगबोंगा हैं तथा इनके अन्य देवी देवताओं का निवास पेड़ों तथा पहाड़ों में पाया जाता है। इनमें पूर्वजों की पूजा का प्रचलन है। असुरों में बहुदेवतावाद का प्रचलन है।

असुरों में अधिकांशत: संयुक्त परिवार पाए जाते हैं। इनका परिवार पितृसत्तात्मक होता है। विवाह बहिर्गोत्रीय होता है अर्थात अपने गोत्र से बाहर विवाह करने की पंरपरा देखी जाती है। असुरों के सामाजिक राजनीतिक जीवन में पंचायती राज का विशेष महत्व है। समाज के रीति-रिवाजों को भंग करना घोर अपराध माना जाता है।

असुरों की वर्तमान परिस्थिति

झारखण्ड की अन्य जनजातियों की तुलना में असुर जनजाति की वर्तमान दशा अत्यंत दयनीय है। इनका निवास दुर्गम जंगली तथा पहाड़ी इलाकों में होने की वजह से ये मुख्यधारा से बिल्कुल अलग-थलग हैं। इसकी वजह से इनके सामने आजीविका की समस्या हमेशा बनी रहती है। इनका परंपरागत पेशा मृतप्राय हो चुका है। जहाँ ये रहते हैं वहीं आसपास की भूमि में कृषि कर गुजर-बसर कर रहे हैं। जंगल से इन्हें बहुत सारी दैनिक जीवन की वस्तुएं मिल जाया करतीं थीं, किंतु जंगल के आरक्षित होने से और वनह्रास के कारण अब वह भी नहीं मिल पा रहा।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

इनके सामने दैनिक जीवन में भोजन पानी की समस्या निरंतर बनी रहती है।

असुर जनजाति का क्षेत्र

आज असुर जनति अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है। उनकी संख्या निरंतर घटती ही जा रही है। वर्तमान समय में ये जनजाति पलामू, गुमला, लोहरदग्गा, सिंहभूम तथा धनबाद के क्षेत्र में सीमित रह गई है।' (वीरोत्तम, 2006: 486) 'इस समय असुरों की आबादी 10347 है। ये सचमुच चिंताजनक स्थिति में हैं अलग राज्य गठन के बावजूद विशेष सरकारी संरक्षण, संवर्धन की योजनाओं की यह विसंगति ही है जो इन विनष्ट होते नस्लीय समूहों की दुर्दशा पर पूरा ध्यान अबतक नहीं दे पाया है।' (विद्याभूषण, 2012: 67)

हेमंत ने अपनी पुस्तक 'झारखण्ड' में लिखा है कि बिरहोर, सबर, कोरवा, और असुर जैसी जनजातियाँ ऐसे पछियों की श्रेणी में शुमार हो गई हैं, जिनकी आबादी बरसों-बरस से स्थिर है। आजादी के 50 साल बाद भी उनकी यह स्थिरता जनसंख्या नियंत्रण और परिवार कल्याण के सरकारी कार्यक्रम का नतीजा नहीं है। यह उन जनजातियों की जीवन शक्ति में तेजी से हो रहे ह्रास का संकेत है।

असुर जनजाति में चिकित्सा के क्षेत्र में अंधविश्वास और जड़ी बूटियों का समन्वय है। गरीबी के कारण उचित पौष्टिक आहार जैसे कार्बोहाइड्रेड, प्रोटीन, वसा की आवश्यक पूर्ति नहीं हो पाती है, जिसके कारण इनका स्वास्थ्य प्रभावित होता है। साथ ही सामान्य बीमारियों के लिए असुर दवा न लेकर कुछ दिन प्रतीक्षा करते हैं, जो इनके जीवन के संकट का कारण बनती है। असुर गाँव में पेयजल हेतु डाड़ी, चूआँ पर लोग निर्भर हैं, जहाँ का पानी गंदा और दूषित होने के कारण असुरों को कई प्रकार के रोग हो जाते हैं।

डॉ. बी वीरोत्तम ने अपनी पुस्तक 'झारखण्ड इतिहास एवं संस्कृति' में लिखा है कि छोटानागपूर की जनजातियों में धूम्रपान का सर्वाधिक प्रचलन संभवतः असुरों में ही था। वे तम्बाकु को सखुआ के पत्तों में लपेटकर पीते थे और हुक्के पर चिल्लम में तम्बाकु तथा आग रखकर पीते थे। इनके बीच खैनी का भी प्रचलन था। नशे के लिए हड़िया, दारू और ताड़ी का प्रयोग होता था। इस तरह यह कहा जा सकता है कि असुरों के जीवन के जीवन शक्ति क्षय होने में इनकी अज्ञानाता, शिक्षा की कमी, जागरूकता का आभाव, नशापान तथा अंधविश्वास की बहुत बड़ी भूमिका है।

'असुर जनजाति का प्राचीन पेशा लौह अयस्कों को गला कर लोहा प्राप्त करना था। इस पेशे में इस जनजाति का पूरा परिवार संलग्न होता था। सरकार की वन संरक्षण नीति के कारण इस परंपरागत पेशे को त्यागना पड़ा। वर्तमान में इस जनजाति का एक भी परिवार लौह अयस्क गलाकर लोहा प्राप्त करने में संलग्न नहीं है। इस पेशे को त्यागने के बाद असुर झूम खेती करते थे। वह भी मृतप्राय हो चुका है। अब ये लोग गाँव में रहकर कृषि करते हैं। वर्तमान में कुछ असुर जनजाति के सदस्य लोहे से निर्मित औजार जैसे - हथौड़ी, छेनी, टांगी आदि बनाने का भी कार्य करते हैं। इनको वे बाजार अथवा हाटों में बेचकर आय प्राप्त करते हैं।' (कुमार श्याम, 2004: 429)

आज भी असुर जनजाति के घरों में परंपरागत पेशे के अवशेष देखे जा सकते हैं। इन्होंने अपने औजारों को सहेज कर रखा हुआ है जिसमे उनके शिकार करने के औजार, मछली पकड़ने की

कुमनी, जंगली जानवरों को फंसाने के फंदे इत्यादि शामिल हैं। वन कानून बनने के पश्चात शिकार करने पर पाबंदी हो गई है, जिससे इनके समक्ष भोजन की समस्या उत्पन्न हो गई है। बी. वीरोत्तम के अनुसार असुरों के बीच सूअर, भेड़, हिरण तथा साहिल के मांस लोकप्रिय थे। भूख में कुछ असुर बाघ, लकड़बग्घा तथा सांप तक खा जाते थे। इनके लिए सांप तथा मुर्गे का मांस एक समान रूप से स्वादिष्ट था।

आज झारखण्ड की स्थापना के 17 वर्षों के बाद भी असुर जनजाति के जनजीवन में ज्यादा फर्क नहीं आया है। आज भी इनकी शिक्षा की स्थिति निम्न स्तर की है। आर्थिक दशा भी उन्नत नहीं हो पाई है। राजनीतिक पंहुच भी जिला तथा राज्य स्तर पर नहीं के बराबर है। प्रशासनिक पदों पर भी असुर जनजाति की उपस्थिति नगण्य है। इसके बाद भी आदिम जनजातियों की वर्तमान स्थिति पर चिंतन- मनन, विचार-विमर्श बहुत कम देखने को मिलता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि असुर जनजाति की प्राचीन काल से अब तक की स्थिति में निरंतर ह्रास की स्थिति रही है। आदिम काल की लौह आविष्कारक की गौरवमयी यात्रा वर्तमान में अस्त्वि संकट की स्थिति के मुहाने पर आ खड़ा हुआ है। इनकी जनसंख्या में निरंतर गिरावट, इनके पारंपरिक जीविका के साधनों के ह्रास तथा वर्तमान समय की शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार इत्यादि की चुनौतियाँ इनके सामने मौजूद हैं। हांलाकि सरकार इन्हें इस परिस्थिति से निकालने में काफी प्रयास कर रही है। इन आदिम जनजातियों के लिए कई कल्याणकारी योजनाएँ लागू की गई हैं। तब भी बिना जनसहयोग के असुर जनजाति के कल्याण को बढ़ावा नहीं मिल सकता। अतः झारखण्ड की जनता को असुर जनजाति के लोगों के कल्याण के लिए आगे आना होगा।

संदर्भ ग्रन्थ

- *बनर्जी, मानगोविन्द, (2007): छोटानागपूर (झारखण्ड) की ऐतिहासिक रूपरेखा, एजुकेशन प्रिंट राँची।*
- *वीरोत्तम, बी (2006): झारखण्ड: इतिहास एवं संस्कृति, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी पटना।*
- *विद्याभूषण (2012): इतिहास के मोड़ पर झारखण्ड, क्राउन पब्लिकेशन, पटना।*
- *सिंह सुनील कुमार (2009): झारखण्ड परिदृश्य, क्राउन पब्लिकेशन, पटना।*
- *सिंह सुनील कुमार (2002): झारखण्ड 2002, रीडर्स कार्नर, पटना।*
- *कुमार, श्याम (2004): झारखण्ड एक विस्तृत अध्ययन, सफल प्रकाशन, राँची।*
- *हेमन्त (2008): झारखण्ड, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली।*